(Sub-he Baharan Hindi)

रिसाला नं. 38

जब तलक येह चांद तारे झिलमिलाते जाएंगे
तब तलक जश्ने विलादत हम मनाते जाएंगे

सुब्हे बहारां

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी

SC-1286

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा।

दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج١ ص٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

सुब्हे बहारां

येह रिसाला (**सुब्हे बहारां**)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेईल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,

अह़मद आबाद-1, गुजरात,

फ़ोन : 09374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

सुब्हे बहारां

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** तआ़ला उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (المعجم الاوسط للطبرانی ج ۵ص ۲۵۲ حدیث ۷۲۳۵)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

माहे **रबीउ़न्नूर शरीफ़** तो क्या आता है हर त़रफ़ मौसिमे बहार आ जाता है। मीठे मीठे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दीवानों में ख़ुशी की लहर दौड़ जाती है, बूढ़ा हो या जवान हर ह़क़ीक़ी मुसल्मान गोया दिल की ज़बान से बोल उठता है :

निसार तेरी चहल पहल पर हज़ार ईदें रबीउ़ल अव्वल
सिवाए इब्लीस के जहां में सभी तो ख़ुशियां मना रहे हैं

जब काएनात में कुफ़्रो शिर्क और वह़्शतो बर-बरिय्यत का घुप अंधेरा छाया हुवा था। बारह **रबीउ़न्नूर शरीफ़** को **मक्कए मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا में ह़ज़रते सय्यि-दतुना आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के मकाने रह़मत निशान से एक ऐसा नूर चमका जिस ने सारे आ़लम को जगमग जगमग कर दिया। सिसक्ती हुई इन्सानिय्यत की आंख जिन की त़रफ़ लगी हुई थी वोह ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

तमाम आ़-लमीन के लिये रह़मत बन कर मादरे गेती पर जल्वा गर हुए।

मुबारक हो कि ख़त्मुल मुर-सलीं तशरीफ़ ले आए

जनाबे रह़मतुल्लिल आ़-लमीं तशरीफ़ ले आए

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सुब्हे बहारां

ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्-मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم क़रारे हर क़ल्बे मह़्ज़ूनो ग़मगीन बन कर 12 **रबीउ़न्नूर शरीफ़** को सुब्हे सादिक़ के वक़्त जहां में तशरीफ़ लाए और आ कर बे सहारों, ग़म के मारों, दुख्यारों, दिल फ़िगारों और दर दर की ठोकरें खाने वाले बेचारों की शामे ग़रीबां को "सुब्हे बहारां" बना दिया।

मुसल्मानो ! सुब्हे बहारां मुबारक

वोह बरसाते अन्वार सरकार आए (वसाइले बख़्शिश, स. 479)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मो'जिज़ात

12 **रबीउ़न्नूर** शरीफ़ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की दुन्या में जल्वा गरी होते ही कुफ़्रो ज़ुल्मत के बादल छट गए, शाहे ईरान "किसरा" के मह़ल पर ज़ल्ज़ला आया, चौदह कुंगुरे गिर गए। ईरान का जो आतश कदा एक हज़ार साल से शो'ला ज़न था वोह बुझ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे। (त-बरानी)

गया, दरियाए सावह ख़ुश्क हो गया, का'बे को वज्द आ गया, और बुत सर के बल गिर पड़े।

तेरी आमद थी कि बैतुल्लाह मुजरे को झुका

तेरी हैबत थी कि हर बुत थरथरा कर गिर गया (ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 41)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जहां में **फ़ज़्लो रह़मत** बन कर **तशरीफ़** लाए और यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत के नुज़ूल का दिन खु़शी व मुसर्रत का दिन होता है। चुनान्चे **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَ بِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿۵۸﴾

(پ۱۱، یونس:۵۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ही के फ़ज़्ल और उसी की रह़मत और इसी पर चाहिये कि खु़शी करें। वोह उन के सब धन दौलत से बेहतर है।

अल्लाहु अक्बर ! रह़मते ख़ुदा वन्दी पर खु़शी मनाने का क़ुरआने करीम हुक्म दे रहा है और क्या हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से बढ़ कर भी कोई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत है ? देखिये मुक़द्दस क़ुरआन में साफ़ साफ़ ए'लान है :

وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۷﴾

(پ۱۷، الانبیاء:۱۰۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने तुम्हें न भेजा मगर रह़मत सारे जहान के लिये।

शबे क़द्र से भी अफ़्ज़ल रात

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं, "बेशक सरवरे आ़लम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शबे विलादत शबे क़द्र से भी अफ़्ज़ल है । क्यूं कि शबे विलादत सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के इस दुन्या में जल्वा गर होने की रात है जब कि **लै-लतुल क़द्र** सरकार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अ़ता कर्दा शब है और जो रात ज़ुहूरे ज़ाते सरवरे काएनात صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की वजह से मुशर्रफ़ हो वोह उस रात से ज़ियादा शरफ़ व इ़ज़्ज़त वाली है जो मलाएका के नुज़ूल की बिना पर मुशर्रफ़ है । (مَا ثَبَتَ بِالسُّنّۃ ص ۱۰۰)

ईदों की ईद

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ 12 **रबीउ़न्नूर** मुसल्मानों के लिये ईदों की भी ईद है । यक़ीनन हुज़ूरे अन्वर सरवर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जहां में शाहे बहूरो बर बन कर जल्वा गर न होते तो कोई ईद, ईद होती, न कोइ शब, शबे बराअत । बल्कि कौनो मकान की तमाम तर रौनक़ व शान इस जाने जहान, रह़मते आ़-लमियान, सय्याहे़ ला मकान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दमों की धूल का सदक़ा है ।

वोह जो न थे तो कुछ न था वोह जो न हों तो कुछ न हो
जान हैं वोह जहान की जान है तो जहान है

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 126)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تعالٰی عليه واٰلهٖ وسلّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़फ़िरत है। (जामेअ़ सग़ीर)

अबू लहब और मीलाद

जब अबू लहब मर गया तो उस के बा'ज़ घर वालों ने उसे ख़्वाब में बुरे ह़ाल में देखा। पूछा, "क्या मिला ?" बोला : तुम से जुदा हो कर मुझे कोई ख़ैर नसीब न हुई। फिर अपने अंगूठे के नीचे मौजूद सूराख़ की त़रफ़ इशारा करते हुए कहने लगा : सिवाए इस के, कि इस में से मुझे पानी पिला दिया जाता है क्यूं कि मैं ने **सुवैबा** लौंडी को आज़ाद किया था।

(مصنف عبدالرزاق ج۹ص۹حديث۱٦٦٦۱ و عمدة القاری ج۱٤ص٤٤ تحت الحديث ۱۰۱ ٥)

ह़ज़रते अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : इस इशारे का मत़लब येह है कि मुझे थोड़ा सा पानी दिया जाता है। (عمدة القاری ايضًا)

मुसल्मान और मीलाद

इस रिवायत के तह़त सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : इस वाक़िए में मीलाद शरीफ़ वालों के लिये बड़ी दलील है जो ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शबे विलादत में खुशियां मनाते और माल ख़र्च करते हैं, या'नी अबू लहब जो कि काफ़िर था जब वोह ताजदारे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत की ख़बर पा कर खुश होने और अपनी लौंडी (**सुवैबा**) को दूध पिलाने की ख़ात़िर आज़ाद करने पर बदला दिया गया। तो उस मुसल्मान का क्या ह़ाल होगा जो मह़ब्बत और खुशी से भरा हुवा है और माल ख़र्च कर रहा है। लेकिन येह ज़रूरी है कि मह़फ़िले मीलाद शरीफ़ गाने बाजों से और आलाते मूसीक़ी से पाक हो। (مدارِجُ النُّبُوَّت ج۲ص۱۹)

जश्ने विलादत की धूम मचाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! धुम धाम से ईदे मीलाद मनाइये कि जब अबू लहब जैसे काफ़िर को भी विलादत की ख़ुशी करने पर फ़ाएदा पहुंचा तो हम तो اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुसल्मान हैं। अबू लहब ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की निय्यत से नहीं बल्कि सिर्फ़ अपने भतीजे की विलादत की ख़ुशी मनाई फिर भी उस को बदला मिला तो हम अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अपने आक़ा व मौला **मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत की ख़ुशी मनाएंगे तो क्यूंकर महरूम रहेंगे ।

घर आमिना के सय्यिदे अबरार आ गया
ख़ुशियां मनाओ ग़मज़दो ग़म ख़्वार आ गया

(वसाइले बख़्शिश, स. 474)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीलाद मनाने वालों से सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुश होते हैं

एक आ़लिम साहिब رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं: اَلْحَمْدُلِلّٰہ मुझे ख़्वाब में ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई, मैं ने अ़र्ज़ की **: या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या आप को मुसल्मानों का हर साल आप की विलादते मुबारक की ख़ुशियां मनाना पसन्द आता है ? इर्शाद फ़रमाया **:** "जो हम से ख़ुश होता है हम भी उस से ख़ुश होते हैं ।" (تذکرۃ الواعظین ص ٦٠٠)

विलादत की ख़ुशी में झन्डे

सय्यि-दतुना आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं **:** मैं ने देखा कि तीन[3] झन्डे नस्ब किये गए। एक मशरिक़ में, दूसरा[2] मग़रिब में, तीसरा[3] का'बे की छत पर और हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत हो गई। (خَصائِصِ کُبریٰ ج اوّل ص۸۲ مختصراً)

रूहुल अमीं ने गाड़ा का'बे की छत पे झन्डा

ता अ़र्श उड़ा फरेरा सुब्हे शबे विलादत (ज़ौक़े ना'त, स. 67)

झन्डे के साथ जुलूस

रहमते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब सूए मदीना हिजरत फ़रमाई और मदीनए पाक زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا के क़रीब "मौज़ए ग़मीम" में पहुंचे तो बुरीदह अस्लमी, क़बीला बनी सह्म के सत्तर सुवार ले कर सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को مَعَاذَاللّٰہِ عَزَّ وَجَل गरिफ़्तार करने आए, मगर **सरकारे आ़ली वक़ार** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की निगाहे फ़ैज़ आसार से ख़ुद ही **महब्बते** शाहे अबरार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में गरिफ़्तार हो कर पूरे क़ाफ़िले समेत मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गए। अब अ़र्ज़ की **: या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **मदीनए मुनव्वरह** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا में आप का दाख़िला परचम के साथ होना चाहिये। चुनान्चे अपना इमामा सर से उतार कर नेज़े पर बांध लिया और सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के आगे आगे रवाना हुए। (وَفاءُ الوَفا ج اوّل ص۲۴۳)

महबूबे रब्बे अक्बर तशरीफ़ ला रहे हैं आज अम्बिया के सरवर तशरीफ़ ला रहे हैं

क्यूं है फ़ज़ा मुअत्तर ! क्यूं रोशनी है घर घर अच्छा ! ह़बीबे दावर तशरीफ़ ला रहे हैं

ईदों की ईद आई रह़मत ख़ुदा की लाई जूदो सख़ा के पैकर तशरीफ़ ला रहे हैं

हूरें लगीं तराने ना'तों के गुनगुनाने हूरो मलक के अफ़्सर तशरीफ़ ला रहे हैं

जो शाहे बह़रो बर हैं नबियों के ताजवर हैं वोह आमिना तेरे घर तशरीफ़ ला रहे हैं

अ़त्तार अब ख़ुशी से फूले नहीं समाते

दुन्या में इन के दिलबर तशरीफ़ ला रहे हैं (वसाइले बख़्शिश, स. 445)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जश्ने विलादत मनाने वाला ख़ानदान

मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا में इब्राहीम नामी एक म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का दीवाना रहा करता था। हमेशा ह़लाल रोज़ी कमाता और अपनी आमदनी का आधा ह़िस्सा **जश्ने विलादत** मनाने के लिये अ़लाह़िदा जम्अ़ करता।[1] **रबीउ़न्नूर** शरीफ़ की आमद होती तो धूमधाम से मगर शरीअ़त के दाएरे में रह कर **जश्ने विलादत** मनाता। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ईसाले सवाब के लिये ख़ूब लंगर करता और अच्छे अच्छे कामों में अपनी रक़म ख़र्च करता। उस की ज़ौजए मोह़तरमा भी आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बहुत दीवानी थी

---

1 : काश ! हम अपनी आमदनी का आधा न सही बारहवां ह़िस्सा बल्कि एक फ़ीसद ही **जश्ने विलादत** के लिये निकाल कर उसे दीन के कामों में सर्फ़ करने का ह़ौसला रखते।

और इन कामों में मुकम्मल तआवुन करती। ज़ौजा की वफ़ात हो गई मगर उस के मा'मूलात में फ़र्क़ न आया। इब्राहीम दीवाने ने एक दिन अपने नौ जवान बेटे को वसिय्यत की : "प्यारे बेटे ! आज रात मेरी वफ़ात हो जाएगी, मेरी तमाम तर पूंजी में पचास दिरहम और उन्नीस गज़ कपड़ा है। कपड़ा तक्फ़ीनो तदफ़ीन पर सर्फ़ करना और रही रक़म तो इसे भी हो सके तो नेक काम में ख़र्च कर देना।" इस के बा'द उस ने **कलिमए तय्यिबा** पढ़ा और उस की रूह़ **क़-फ़से उ़न्सुरी** से परवाज़ कर गई।

बेटे ने ह़स्बे वसिय्यत वालिदे मर्ह़ूम को सिपुर्दे ख़ाक कर दिया। अब पचास50 दिरहम नेक काम में ख़र्च करने के मुआ-मले में उस को समझ नहीं आती थी कि क्या करे। इसी फ़िक्र में रात जब सोया तो ख़्वाब में देखा कि क़ियामत क़ाइम और हर त़रफ़ नफ़्सी नफ़्सी का आ़लम है, ख़ुश नसीब लोग सूए जन्नत रवां दवां हैं, जब कि मुजरिमों को घसीट घसीट कर जहन्नम की त़रफ़ हांका जा रहा है और येह खड़ा थर थर कांप रहा है कि इस के बारे में न जाने क्या फ़ैसला होता है। इतने में ग़ैब से निदा आई, "इस नौ जवान को जन्नत में जाने दो।" चुनान्चे वोह ख़ुशी ख़ुशी जन्नत में दाख़िल हो गया और सैर करने लगा। सातों जन्नतों की सैर करने के बा'द जब आठवीं जन्नत की त़रफ़ बढ़ा तो **दारोग़ए जन्नत ह़ज़रते रिज़वान** ने फ़रमाया : "इस जन्नत में सिर्फ़ वोही दाख़िल हो सकता है जिस ने **माहे रबीउ़न्नूर** में विलादते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के अय्याम में ख़ुशी मनाई हो।" येह सुन कर वोह समझ गया कि मेरे वालिदैने मर्ह़ूमैन इसी में होने चाहिएं। इतने में आवाज़ आई : "इस नौ जवान को अन्दर आने दो, इस के वालिदैन इस से मिलना चाहते हैं।"

लिहाज़ा वोह अन्दर दाख़िल हुवा। उस ने देखा कि उस की वालिदए मर्हूमा नहरे कौसर के क़रीब बैठी है, साथ ही एक तख़्त बिछा है जिस पर एक बुज़ुर्ग ख़ातून जल्वा अफ़रोज़ हैं और उस के इर्द गिर्द कुर्सियां बिछी हैं जिन पर कुछ पुर वक़ार ख़वातीन तशरीफ़ फ़रमा हैं। इस ने एक फ़िरिश्ते से पूछा : येह ख़वातीन कौन हैं ? उस ने बताया :

"तख़्त पर शहज़ादिये कौनैन सय्यि-दतुना फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا हैं और कुर्सियों पर, ख़दी-जतुल कुब्रा, आ़इशा सिद्दीक़ा, सय्यि-दतुना मरयम, सय्यि-दतुना आसिया, सय्यि-दतुना सारह, सय्यि-दतुना हाजिरा, सय्यि-दतुना राबिआ़ और सय्यि-दतुना ज़ुबैदा (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ) हैं।" इसे बहुत ख़ुशी हुई। मज़ीद आगे बढ़ा तो क्या देखता है कि एक बहुत ही अ़ज़ीम तख़्त बिछा है और उस पर सरकारे आ़लम मदार, मदीने के ताजदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार, शाफ़ेए़ रोज़े शुमार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपना चांद सा चेहरा चमकाते रौनक़ अफ़रोज़ हैं। इर्द गिर्द चार कुर्सियां बिछी हुई हैं उन पर ख़ु-लफ़ाए राशिदीन عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان तशरीफ़ फ़रमा हैं। दाईं त़रफ़ सोने की कुर्सियों पर अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ السَّلَام रौनक़ अफ़रोज़ और बाईं जानिब शु-हदाए किराम जल्वा फ़रमा हैं। इतने में उस के वालिदे मर्हूम इब्राहीम भी सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब ही झुरमुट में नज़र आ गए। **वालिद साह़िब** ने अपने लख़्ते जिगर को सीने से लगा लिया, वोह बहुत ख़ुश हुवा और सुवाल किया : अब्बाजान ! आप को येह आ़लीशान रुत्बा क्यूंकर ह़ासिल हुवा ? जवाब दिया : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! **येह जश्ने विलादत मनाने**

का सिला है । इस के बा'द उस नौ जवान की आंख खुल गई ।

सुब्ह होते ही उस ने अपना मकान औने पौने दामों बेचा और वालिदे मर्हूम के बचे हुऐ पचास दिरहम के साथ अपनी सारी रक़म मिला कर तआम का एहतिमाम किया और उ-लमा व सु-लहा की दा'वत की । उस का दिल दुन्या से उचाट हो चुका था, चुनान्चे मस्जिद में इबादत और उसी की ख़िदमत में मश्गूल रहने लगा और अपनी ज़िन्दगी के बक़िय्या तीस साल इसी तरह गुज़ार दिये । बा'दे वफ़ात किसी ने उसे ख़्वाब में देख कर पूछा : क्या गुज़री ? बोला : **मुझे जश्ने विलादत मनाने की ब-र-कत से जन्नत में अपने वालिदे मर्हूम के पास पहुंचा दिया गया है ।** (मुलख़्ख़स अज़ तज़्कि-रतुल वाइज़ीन उर्दू, स. 557) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

बख़्श दे मुझ को इलाही बहरे मीलादुन्नबी

नामए आ'माल इस्यां से मेरा भरपूर है (वसाइले बख़्शिश, स. 477)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जश्ने विलादत मनाने का सवाब

शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत की रात ख़ुशी मनाने वालों की जज़ा येह है कि **अल्लाह** तआला उन्हें फ़ज़्लो करम से **जन्नातुन्नईम** में दाख़िल फ़रमाएगा । मुसल्मान हमेशा से मह़फ़िले मीलाद मुन्अ़क़िद

करते आए हैं और विलादत की ख़ुशी में दा'वतें देते, खाने पकवाते और ख़ूब स-दक़ा व ख़ैरात देते आए हैं। ख़ूब ख़ुशी का इज़्हार करते और दिल खोल कर ख़र्च करते हैं नीज़ आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआदत के ज़िक्र का एहतिमाम करते हैं और अपने मकानों को सजाते हैं और इन तमाम अफ़्आले ह़-सना की ब-र-कत से उन लोगों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतों का नुज़ूल होता है। (مَا ثَبَتَ بِالسُّنَّۃ ص ۱۰۲ ملتقطًا)

यहूदियों को ईमान नसीब हो गया

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वाह़िद बिन इस्माईल علیہ رحمۃ اللہ الجمیل फ़रमाते हैं : मिस्र में एक आ़शिक़े रसूल रहा करता था जो **रबीउ़न्नूर शरीफ़** में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे मह़बूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़ूब जश्ने विलादत मनाया करता था। एक बार **रबीउ़न्नूर शरीफ़** के महीने में उन की पड़ोसन यहूदन ने अपने शोहर से पूछा : हमारा मुसल्मान पड़ोसी इस महीने में हर साल ख़ुसूसी दा'वत वग़ैरा का एहतिमाम क्यूं करता है ? यहूदी ने बताया कि इस महीने में इस के नबी صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत हुई थी लिहाज़ा येह उन का **जश्ने विलादत** मनाता है और मुसल्मान इस महीने की बहुत ता'ज़ीम किया करते हैं। इस पर यहूदन ने कहा : "वाह ! मुसल्मानों का त़रीक़ा भी कितना प्यारा है कि येह लोग अपने नबी صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का हर साल **जश्ने विलादत** मनाते हैं।" वोह यहूदन रात जब सोई तो उस की सोई हुई क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, ख़्वाब में क्या देखती है कि एक निहायत ही ह़सीनो जमील बुज़ुर्ग तशरीफ़ लाए हैं, इर्द गिर्द लोगों का हुजूम है। इस ने आगे बढ़ कर

एक शख़्स से दरयाफ़्त किया : येह बुज़ुर्ग कौन हैं ? उस ने बताया : "येह नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान, रह़मते आ-लमियान, **मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं । आप इस लिये तशरीफ़ लाए हैं ताकि तुम्हारे मुसल्मान पड़ोसी को **जश्ने विलादत** मनाने पर ख़ैरो ब-र-कत अ़ता फ़रमाएं और उन से मुलाक़ात फ़रमाएं नीज़ इस पर इज़्हारे मुसर्रत करें ।" यहूदन ने फिर पूछा : क्या आप के नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी बात का जवाब देंगे ? उस ने जवाब दिया : जी हां । इस पर यहूदन ने सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पुकारा । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाब में **लब्बैक** फ़रमाया । वोह बेह़द मु-तअस्सिर हुई और कहने लगी : मैं तो मुसल्मान नहीं हूं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर भी मुझे **लब्बैक** कह कर जवाब दिया । सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मुझे बताया गया है कि तू मुसल्मान होने वाली है । इस पर वोह बे साख़्ता पुकार उठी : बेशक आप नबिय्ये करीम, साहि़बे ख़ुल्क़े अ़ज़ीम हैं, जो आप की ना फ़रमानी करे वोह हलाक हुवा और जो आप की क़द्रो मन्ज़िलत न जाने वोह ख़ाइबो ख़ासिर (या'नी नुक़्सान उठाने वाला) हुवा । फिर उस ने कलिमए शहादत पढ़ा ।

अब उस की आंख खुल गई और वोह सच्चे दिल से मुसल्मान हो गई और उस ने येह तै कर लिया कि सुब्ह़ उठ कर सारी पूंजी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के **जश्ने विलादत** की ख़ुशी में लुटा दूंगी और ख़ूब नियाज़ करूंगी । जब सुब्ह़ उठी तो उस का शोहर

दा'वते त़आ़म की तय्यारी में मसरूफ़ था। उस ने ह़ैरत से पूछा : आप येह क्या कर रहे हैं ? उस ने कहा : इस बात की ख़ुशी में दा'वत का एहतिमाम कर रहा हूं कि तुम मुसल्मान हो चुकी हो। पूछा : आप को कैसे मा'लूम हुवा ? उस ने बताया : मैं भी रात हु़ज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते ह़क़ परस्त पर ईमान ला चुका हूं। (تذْکِرَۃُ الْواعِظِین ص٥٩٨ ملخصًا) **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

आमदे सरकार से ज़ुल्मत हुई काफ़ूर है
क्या ज़मीं, क्या आस्मां, हर सम्त छाया नूर है (वसाइले बख़्शिश, स. 476)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी और जश्ने विलादत

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी का **जश्ने विलादत** मनाने का अपना एक **मुन्फ़रिद** अन्दाज़ है, दुन्या के बे शुमार मुमालिक में दा'वते इस्लामी के ज़ेरे एहतिमाम ईदे मीलादुन्नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शब को अ़ज़ीमुश्शान **इज्तिमाए़ मीलाद** का इन्इ़क़ाद होता है। और ग़ालिबन दुन्या का सब से बड़ा इज्तिमाए़ मीलाद बाबुल मदीना कराची में होता है। इस की ब-र-कतों के क्या कहने ! इस में शिर्कत

करने वाले न जाने कितने ही ख़ुश नसीबों की ज़िन्दगियों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाता है। चुनान्चे इस ज़िम्न में **चार म-दनी बहारें** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

《1》 गुनाह का इलाज मिल गया

एक आ़शिक़े रसूल का कुछ इस त़रह़ बयान है : शबे ईदे मीलादुन्नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم (1426 हि.) के **इज्तिमाए़ मीलाद मुन्अ़क़िदा** ककरी ग्राउन्ड बाबुल मदीना कराची में मेरे एक शनासा बे नमाज़ी और मॉडर्न नौ जवान ने शिर्कत की, सुब्हे बहारां के इस्तिक़्बाल के वक़्त **दुरूदो सलाम** की गूंज और **मरह़बा या मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की धूम के दौरान उन के दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हो गई, नेकियों की त़रफ़ रग़्बत और गुनाहों से नफ़रत का जज़्बा मिला, उन्हों ने हाथों हाथ नमाज़ की पाबन्दी और दाढ़ी सजाने की निय्यत की और वाक़ेई वोह नमाज़ी और बा रीश हो गए। नीज़ उन के अन्दर एक ''बुराई'' की आ़दत थी जिस का ज़िक्र करना मुनासिब नहीं, **इज्तिमाए़ मीलाद** की ब-र-कत से اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ वोह भी दूर हो गई। दूसरे अल्फ़ाज़ में यूं कहिये कि इज्तिमाए़ मीलाद में शिर्कत की सआ़दत से मरीज़े इस्यां को गुनाहों का इलाज मिल गया !

मांग लो मांग लो उन का ग़म मांग लो　　चश्मे रह़मत निगाहे करम मांग लो
मा'सिय्यत की दवा ला जरम मांग लो　　मांगने का मज़ा आज की रात है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾2﴿ दिल का मैल धो दिया

नोर्थ कराची के एक इस्लामी भाई का तह़रीरी बयान अपने अन्दाज़ में अ़र्ज़ करता हूं : माहे रबीउ़न्नूर शरीफ़ के इब्तिदाई दिनों में बा'ज़ आ़शिक़ाने रसूल ने मुझ गुनाहों में डूबे हुए बे अ़मल इन्सान पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए ककरी ग्राउन्ड बाबुल मदीना कराची में मुन्अ़क़िद होने वाले दा'वते इस्लामी के **इज्तिमाए़ मीलाद** में शिर्कत की दा'वत दी । मेरी खुश क़िस्मती कि मैं ने हामी भर ली, जब 12वीं शब आई तो मैं ह़स्बे वा'दा **इज्तिमाए़ मीलाद** में जाने के लिये म-दनी क़ाफ़िले वालों के साथ बस में सुवार हो गया । एक आ़शिक़े रसूल ने एक अ़दद चमचम नामी मिठाई में से तक़रीबन तीस30 इस्लामी भाइयों में तोड़ तोड़ कर टुकड़ियां तक़्सीम कीं, तक़्सीम करने वाले का **मह़ब्बत** भरा अन्दाज़ मेरे दिल को बहुत भाया । आख़िर कार हम **इज्तिमाए़ मीलाद** में पहुंच गए । मैं ने ज़िन्दगी में पहली बार ही ऐसे रूह़ परवर मनाज़िर देखे थे, सलामों और मरह़बा या मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पुरकैफ़ ना'रों ने **दिल का मैल धो दिया** । اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मैं हाथों हाथ दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया । اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ अब चेहरे पर दाढ़ी मुबारक के अन्वार और सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ की बहार है नीज़ ता दमे तह़रीर अ़लाक़ाई मुशा-वरत के ख़ादिम (निगरान) की ह़ैसिय्यत से सुन्नतों की धूमें मचाने की सआ़दत **मुयस्सर** है ।

अ़ताए ह़बीबे ख़ुदा म-दनी माह़ोल   है फ़ैज़ाने ग़ौसो रज़ा म-दनी माह़ोल
यहां सुन्नतें सीखने को मिलेंगी   दिलाएगा ख़ौफ़े ख़ुदा म-दनी माह़ोल
यक़ीनन मुक़द्दर का वोह है सिकन्दर
जिसे ख़ैर से मिल गया म-दनी माह़ोल (वसाइले बख़्शिश, स. 604)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾3﴿ नूर की बारिश

ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم (सि. 1417 हि.) को दोपहर के वक़्त हर साल की त़रह़ ज़ोहर की नमाज़ के बा'द दा'वते इस्लामी के ह़ल्क़ा नाज़िमआबाद बाबुल मदीना कराची का म-दनी जुलूस **सरकार की आमद मरह़बा** के ना'रे लगाता और **मरह़बा या मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की धूमें मचाता सड़कों से गुज़र रहा था । जगह जगह जुलूस रोक कर शु-रका को बिठा कर **नेकी की दा'वत** पेश की जा रही थी । दरीं अस्ना एक मक़ाम पर कमो बेश दस[10] सालह म-दनी मुन्ने ने "नेकी की दा'वत" पेश की । जुलूस पर सुकूत त़ारी था । बयान ख़त्म होने पर एक शख़्स उठा और पूछता हुवा निगराने ह़ल्क़ा के पास पहुंचा, उस पर रिक़्क़त त़ारी थी, कहने लगा : "मैं ने अपनी खुली आंखों से देखा कि दौराने बयान आप के नन्हे मुन्ने मुबल्लिग़ समेत तमाम शु-रकाए जुलूस पर **नूर की बारिश** हो रही थी । मुआ़फ़ कीजिये मैं ग़ैर मुस्लिम हूं, मेहरबानी कर के मुझे झट दाख़िले इस्लाम कर लीजिये ।" मरह़बा के ना'रों से फ़ज़ा का सीना दहल गया । ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के म-दनी जुलूस की अ़-ज़मत और दा'वते इस्लामी की बा ब-र-कत म-दनी

बहार देख कर शैत़ान सर पीट कर रह गया। दाख़िले इस्लाम होने के बा'द वोह शख़्स येह कहता हुवा चल पड़ा कि اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ मैं अपने ख़ानदान में जा कर इस्लाम की दा'वत पेश करूंगा। चुनान्चे उस ने ऐसा ही किया और उस की इन्फ़िरादी कोशिश की ब-र-कत से उस की बीवी और तीन3 बच्चे नीज़ उस के वालिद साहिब दीने इस्लाम के दामन में आ गए।

ईदे मीलादुन्नबी है दिल बड़ा मसरूर है
ईद दीवानों की तो बारह रबीउ़न्नूर है
हर मलक है शादमां ख़ुश आज हर इक हूर है
हां मगर शैत़ान मअ़ रु-फ़क़ा बड़ा रन्जूर है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾4﴿ आज भी जल्वे आ़म हैं

एक आ़शिक़े रसूल का कुछ इस त़रह़ बयान है : शबे ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ककरी ग्राउन्ड बाबुल मदीना कराची में **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से मुन्अ़क़िद कर्दा बड़ी रात के ग़ालिबन दुन्या के सब से बड़े इज्तिमाए़ मीलाद में हम चन्द इस्लामी भाई ह़ाज़िर हुए। बर सबीले तज़्किरा एक इस्लामी भाई कहने लगे : **दा'वते इस्लामी** के **इज्तिमाए़ मीलाद** में पहले काफ़ी रिक़्क़त हुवा करती थी अब वोह बात नहीं रही। येह सुन कर दूसरा बोला : यार ! आप की यहां भूल हो रही है, **इज्तिमाए़ मीलाद** की कैफ़िय्यत तो वोही है मगर हमारे दिलों की कैफ़िय्यत पहले की सी नहीं रही, ज़िक्रे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم भला

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واله وسلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे । (त–बरानी)

कैसे बदल सकता है हमारी ज़ेहनिय्यत तब्दील हो गई है ! अगर आज भी हम तन्क़ीद की ख़ुश्क वादियों में भटकने के बजाए बसद अ़क़ीदत ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़सीन तसव्वुर में डूब कर ना'त शरीफ़ सुनें तो اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ करम बालाए करम होगा । पहले इस्लामी भाई का शैत़ानी वस्वसों पर मब्नी ग़ैर ज़िम्मादाराना ए'तिराज़ अगर्चे क़दमों को **मु–तज़ल्ज़ल** कर के, बोरियत दिला कर इज्तिमाए मीलाद से मह़रूम कर के वापस घर पहुंचाने वाला था मगर दूसरे इस्लामी भाई का जवाब सद करोड़ मरह़बा ! कि वोह नफ़्से लव्वामा को जगाने वाला शैत़ान को भगाने वाला था । चुनान्चे वोह जवाबे बिस्सवाब तासीर का तीर बन कर मेरे जिगर में पैवस्त हो गया मैं ने हिम्मत की, क़दम उठाए और **इज्तिमाए मीलाद** के वस्त़ में जा पहुंचा और आ़शिक़ाने रसूल के अन्दर जम कर बैठ गया और ना'तों के पुरकैफ़ नग़्मों में खो गया । **सुब्हे सादिक़** का सुहाना वक़्त क़रीब आया, तमाम आ़शिक़ाने रसूल **सुब्हे बहारां** के इस्तिक़्बाल के लिये खड़े हो गए, इज्तिमाअ़ पर एक वज्द सा त़ारी था, हर त़रफ़ मरह़बा की धूमें मची थीं, शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में दुरूदो सलाम के गुलदस्ते पेश किये जा रहे थे, आ़शिक़ाने रसूल की आंखों से सैले अश्क रवां थे, हर त़रफ़ से आहों और सिस्कियों की आवाज़ें आ रही थीं, मुझ पर भी अ़जीब कैफ़ो मस्ती त़ारी थी, **मेरी गुनहगार आंखों ने हर त़रफ़ हलकी हलकी बुंदकियां और ख़ुश गवार फुवार बरसती देखी, गोया सारे का सारा इज्तिमाअ़ बाराने रह़मत में नहा रहा था, मैं सर की आंखें बन्द किये प्यारे प्यारे आक़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **के ह़सीन**

तसव्वुर में गुम दुरूदो सलाम पढ़ने में मश्ग़ूल था । यकायक दिल की आंखें खुल गई, सच कहता हूं, जिस का जश्ने विलादत मनाया जा रहा था उसी शहन्शाहे उमम, नूरे मुजस्सम, नबिय्ये मोह़तरम, रसूले मुह़्तशम, ह़बीबे रब्बे अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **ने मुझ सरापा गुनहगार व सज़ावारे ज़म पर करम बालाए करम फ़रमा दिया और मुझे अपना जल्वए ज़ैबा दिखा दिया,** اَلْحَمْدُلِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ **दीदारे मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **से कलेजा ठन्डा हो गया ।** वाक़ेई उस इस्लामी भाई ने बिल्कुल सच कहा था कि दा'वते इस्लामी का **इज्तिमाए मीलाद** तो ह़स्बे साबिक़ सोज़ व रिक्क़त वाला ही है मगर हमारी अपनी कैफ़िय्यत बदल गई है अगर हम मु-तवज्जेह रहें तो आज भी उन के जल्वे आ़म हैं :

आंख वाला तेरे जोबन का तमाशा देखे दीदए कोर को क्या आए नज़र क्या देखे

कोई आया पा के चला गया, कोई उ़म्र भर भी न पा सका
येह बड़े करम के हैं फ़ैसले येह बड़े नसीब की बात है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"मरह़बा या मुस्त़फ़ा" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से जश्ने विलादत के 12 म-दनी फूल

1 **जश्ने विलादत** की ख़ुशी में मस्जिदों, घरों, दुकानों और सुवारियों पर नीज़ अपने मह़ल्ले में भी सब्ज़ सब्ज़ परचम लहराइये, ख़ूब चराग़ां कीजिये, अपने घर पर कम अज़ कम

बारह बल्ब तो ज़रूर रोशन कीजिये । **रबीउ़न्नूर शरीफ़** की बारहवीं रात हुसूले सवाब की निय्यत से **इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त** में शिर्कत कीजिये और सुब्हे सादिक़ के वक़्त सब्ज़ सब्ज़ परचम उठाए दुरूदो सलाम पढ़ते हुए अश्कबार आंखों के साथ **सुब्हे बहारां** का इस्तिक़्बाल कीजिये । 12 **रबीउ़न्नूर** शरीफ़ के दिन हो सके तो रोज़ा रख लीजिये कि हमारे प्यारे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पीर शरीफ़ को रोज़ा रख कर अपना यौमे विलादत मनाते थे । जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं **:** बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में **पीर** के रोज़े के बारे में दरयाफ़्त किया गया तो इर्शाद फ़रमाया **:** "इसी दिन मेरी विलादत हुई और इसी रोज़ मुझ पर वह्‌य नाज़िल हुई ।" (صَحیح مُسلِم ص ٥٩١ حدیث١٩٨-(١١٦٢)) शारेहे़ सही़ह़ बुख़ारी ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़स्त़लानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं **:** "और विलादते बा सआ़दत के अय्याम में मह़फ़िले मीलाद करने के ख़्वास से येह अम्र **मुजर्रब** (या'नी तजरिबा शुदा) है कि इस साल अम्नो अमान रहता है और हर मुराद पाने में जल्दी आने वाली ख़ुश ख़बरी होती है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स पर रह़मत नाज़िल फ़रमाए जिस ने माहे विलादत की रातों को ईद बना लिया ।"

(مواھِبُ لَّدُنیَّه ج١ ص١٤٨)

2 **का'बतुल्लाह शरीफ़** के नक़्शे **(MODLE)** में مَعَاذَالله कहीं कहीं गुड़ियों का त़वाफ़ दिखाया जाता है, येह गुनाह है । ज़मानए

जाहिलिय्यत में **का'बतुल्लाह शरीफ़** में तीन सो साठ[360] बुत रखे हुए थे, हमारे प्यारे और मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़त्हे मक्का के बा'द **का'बतुल मुशर्रफ़ा** को बुतों से पाक फ़रमा दिया। लिहाज़ा नक़्शे में भी बुत (गुड़ियां) नहीं होने चाहिएं, इस की जगह प्लास्टिक के फूल रखे जा सकते हैं। (तवाफ़े का'बा के मन्ज़र की तस्वीर जिस में चेहरे वाज़ेह नज़र नहीं आते उस को मस्जिद या घर वग़ैरा में लगाना जाइज़ है, हां जिस तस्वीर को ज़मीन पर रख कर खड़े खड़े देखने से चेहरा वाज़ेह नज़र आए उस का आवेज़ां करना ना जाइज़ व गुनाह है।)

3 **ऐसे** "बाब" **(GATE)** लगाना जाइज़ नहीं जिन में मोर वग़ैरा बने हुए हों। जानदारों की तसावीर की मज़म्मत में दो[2] अहादीसे मुबा-रका पढ़िये और ख़ौफ़े ख़ुदा वन्दी से लरज़िये : ﴾**1**﴿(रहमत के) फ़िरिश्ते उस घर में दाख़िल नहीं होते जिस घर में कुत्ता या तस्वीर हो। (بُخاری ج۲ ص ۴۰۹ حدیث ۳۳۲۲) ﴾**2**﴿ जो कोई (जानदार की) तस्वीर बनाएगा **अल्लाह** तआला उस को उस वक़्त तक अज़ाब देता रहेगा जब तक उस तस्वीर में रूह़ न फूंक दे और वोह उस में कभी भी रूह़ न फूंक सकेगा।

(صَحیح بُخاری ج۲ ص ۵۱ حدیث ۲۲۲۵)

4 **जश्ने विलादत** की ख़ुशी में बा'ज़ जगह गाने बाजे बजाए जाते हैं ऐसा करना शरअ़न गुनाह है। इस सिल्सिले में दो[2] रिवायात पेशे ख़िदमत हैं : ﴾**1**﴿ सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मुझे ढोल और बांसरी

तोड़ने का हुक्म दिया गया है ।" (فِردَوسُ الاخبار ج١ ص٤٨٣ حديث١٦١٢) ﴾2﴿ हज़रते सय्यिदुना ज़ह़ाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत है : गाना दिल को ख़राब और रब तबा-र-क व तआ़ला को नाराज़ करने वाला है । (تفسيراتِ اَحمديَّه ص ٦٠٣)

5 **ना'ते पाक** की **केसिटें** बेशक चलाइये मगर धीमी आवाज़ में और इस एह़तियात़ के साथ कि किसी इबादत करने वाले, सोते हुए या मरीज़ वग़ैरा को तक्लीफ़ न हो नीज़ अज़ान व अवक़ाते नमाज़ की भी रिआ़यत कीजिये । (औ़रत की आवाज़ में ना'त की केसिट मत चलाइये)

6 **गली** या सड़क वग़ैरा की ज़मीन पर इस त़रह़ सजावट करना, परचम गाड़ना जिस से रास्ता चलने और गाड़ी चलाने वाले मुसल्मानों को तक्लीफ़ हो, ना जाइज़ है ।

7 **चराग़ां** देखने के लिये औ़रतों का अजनबी मर्दों में बे पर्दा निकलना ह़राम व शर्मनाक नीज़ बा पर्दा औ़रतों का भी मुरव्वजा अन्दाज़ में मर्दों में इख़्तिलात़ (या'नी ख़ल्त़ मल्त़ होना) इन्तिहाई अफ़्सोस नाक है । नीज़ बिजली की चोरी भी ना जाइज़ है । लिहाज़ा इस सिल्सिले में बिजली फ़राहम करने वाले इदारे से राबित़ा कर के जाइज़ ज़राएअ़ से चराग़ां की तरकीब बनाइये ।

8 **जुलूसे** मीलाद में ह़त्तल इम्कान बा वुज़ू रहिये, नमाज़े बा जमाअ़त की पाबन्दी का ख़याल रखिये । आ़शिक़ाने रसूल नमाज़ की जमाअ़त तर्क करने वाले नहीं हुवा करते ।

9 **जुलूसे** मीलाद में घोड़ा गाड़ी और ऊंट गाड़ी मत लाइये क्यूं कि

घोड़े और ऊंट के पेशाब और लीद से आ़शिक़ाने रसूल के कपड़े वग़ैरा पलीद होने का अन्देशा रहता है ।

10 **जुलूस** में ''लंगरे रसाइल'' चलाइये या'नी **मक-त-बतुल मदीना** के मत्बूआ़ रिसाले और म-दनी फूलों के मुख़्तलिफ़ पेम्फ़लेट नीज सुन्नतों भरे बयानात की V.C.D.s वग़ैरा ख़ूब तक़्सीम कीजिये नीज़ फल और अनाज वग़ैरा तक़्सीम करने में भी फेंकने के बजाए लोगों के हाथों में दीजिये, ज़मीन पर गिरने बिखरने और क़दमों तले कुचलने से इन की बे हुरमती होती है ।

11 **इश्तिआ़ल** अंगेज़ ना'रे बाज़ी पुर वक़ार जुलूसे मीलाद को **मुन्तशिर** कर सकती है, पुर अम्न रहने में आप की अपनी भलाई है ।

12 **ख़ुदा न ख़्वास्ता** अगर कहीं हलका फुलका पथराव हो भी जाए तब भी जज़्बात में आ कर जवाबी कारवाई पर न उतर आएं कि इस त़रह़ आप का **जुलूसे मीलाद** तित्तर बित्तर और दुश्मन की मुराद बार आवर......।

ग़ुन्चे चटके, फूल महके हर त़रफ़ आई बहार
हो गई सुब्हे बहारां ईदे मीलादुन्नबी (वसाइले बख़्शिश, स. 465)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जश्ने विलादत के बारे में मक्तूबे अ़त्तार

(म-दनी इल्तिजा है कि हर हर जगह हर साल माहे स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र के आख़िरी हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में याद दिहानी के लिये मक्तूबे अ़त्तार पढ़ कर सुना दिया जाए । इस्लामी बहनें और इस्लामी भाई ह़स्बे ह़ाल तरमीम फ़रमा लें)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ सगे मदीना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी عُفِیَ عَنۡہُ की जानिब से तमाम आ़शिक़ाने रसूल इस्लामी भाइयों / इस्लामी बहनों की ख़िदमत में **जश्ने विलादत** की ख़ुशी में लहराते हुए सब्ज़ सब्ज़ परचमों, जग-मगाते बल्बों और नन्हे नन्हे कुमकुमों को चूमता हुवा झूमता हुवा शहद से भी मीठा मक्की म-दनी सलाम,

السلام علیکم وَرَحْمَةُ الله وبر کاتُه   الحمدُ لله رَبِّ العٰلمینَ علٰی کُلِ حال۔

तुम भी कर के उन का चरचा अपने दिल चमकाओ
ऊंचे में ऊंचा नबी का झन्डा घर घर में लहराओ

1 चांद रात को इन अल्फ़ाज़ में तीन[3] बार मसाजिद में ए'लान करवाइये : ''तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों को मुबारक हो कि रबीउ़न्नूर शरीफ़ का चांद नज़र आ गया है।''

रबीउ़न्नूर उम्मीदों की दुन्या साथ ले आया
दुआ़ओं की क़बूलिय्यत को हाथों हाथ ले आया

2 **मर्द** का दाढ़ी मुंडवाना या एक मुठ्ठी से घटाना दोनों[2] ह़राम है। इस्लामी बहन का बे पर्दगी करना ह़राम है । बराए करम ! **रबीउ़न्नूर** शरीफ़ की ब-र-कत से इस्लामी भाई हमेशा के लिये एक मुठ्ठी दाढ़ी और इस्लामी बहनें मुस्तक़िल शर-ई पर्दा और ज़हे क़िस्मत म-दनी बुरक़अ़ पहनने की निय्यत करें । (मर्द का दाढ़ी मुंडाना या एक मुठ्ठी से घटाना और औ़रत का बे पर्दगी करना ह़राम और फ़ौरन तौबा कर के इन गुनाहों से बाज़ आना वाजिब है)

झुक गया का'बा सभी बुत मुंह के बल औंधे गिरे
दबदबा आमद का था, अहलंव व सहलन मरह़बा (वसाइले बख़्शिश, स. 257)

3 **सुन्नतों** और नेकियों पर इस्तिक़ामत पाने का अ़ज़ीम म-दनी नुस्ख़ा येह है कि तमाम आ़शिक़ाने रसूल इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें रोज़ाना "**फ़िक्रे मदीना**" करते हुए **म-दनी इन्आ़मात** के रिसाले पुर कर के हर माह जम्अ़ करवाने की निय्यत करें, हाथ उठा कर कहिये : اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

बदलियां रह़मत की छाई बूंदियां रह़मत की आई

अब मुरादें दिल की पाई आमदे शाहे अ़रब है (क़बालए बख़्शिश, स. 465)

4 **तमाम** आ़शिक़ाने रसूल ब शुमुल निगरान व ज़िम्मेदारान **रबीउ़न्नूर शरीफ़** में ख़ुसूसियत के साथ कम अज़ कम तीन[3] रोज़ा **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल करें। और इस्लामी बहनें 30 दिन तक रोज़ाना घर के अन्दर (सिर्फ़ घर की इस्लामी बहनों और मह़रमों में) दर्से **फ़ैज़ाने सुन्नत** जारी करें और फिर आइन्दा भी रोज़ाना जारी रखने की निय्यत फ़रमाएं।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो

सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो (वसाइले बख़्शिश, स. 611)

5 **अपनी** मस्जिद, घर, दुकान, कारख़ाने वग़ैरा पर 12 अ़दद वरना कम अज़ कम एक अ़दद सब्ज़ सब्ज़ परचम **रबीउ़न्नूर शरीफ़** की चांद रात से ले कर सारा महीना लहराइये। बसों, वेगनों, ट्रकों, ट्रालियों, टेक्सियों, रिक्शों, रेढ़ों, घोड़ा गाड़ियों वग़ैरा पर ज़रूरतन अपने पल्ले से परचम ख़रीद कर बांध दीजिये। अपनी साइकिल, स्कूटर, और कार पर भी लगाएं। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ हर

त़रफ़ सब्ज़ सब्ज़ परचमों की बहारें मुस्कराती नज़र आएंगी। उ़मूमन ट्रकों के पीछे जानदारों की बड़ी बड़ी तस्वीरें और बेहूदा अश्आ़र लिखे होते हैं। मेरी आरज़ू है कि ट्रकों, बसों, वेगनों, रिक्शों, टेक्सियों, सूज़ूकियों और कारों वग़ैरा के पीछे नुमायां अल्फ़ाज़ में तह़रीर हो **मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है**। मालिकाने बस और ट्रान्सपोर्ट वालों से मिल कर म-दनी तरकीबें कीजिये और सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ के दिल की दुआ़एं लीजिये ।

ज़रूरी एह़तियात़ : अगर झन्डे पर नक़्शे ना'ले पाक या कोई लिखाई हो तो इस बात का ख़याल रखिये कि न वोह लीरे लीरे हो, न ही ज़मीन पर तशरीफ़ लाए। नीज़ जूं ही रबीउ़न्नूर शरीफ़ का महीना तशरीफ़ ले जाए फ़ौरन उतार लीजिये। अगर एह़तियात़ नहीं कर पाते और बे अ-दबी हो जाती है तो बिग़ैर नक़्श व तह़रीर के सादा सब्ज़ परचम लहराइये। (सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ भी ह़त्तल इम्कान अपने मकाने बे निशान बनाम "बैतुल फ़ना" पर सादा झन्डे लगवाता है।)

नबी का झन्डा ले कर निकलो दुन्या पर छा जाओ

नबी का झन्डा अम्न का झन्डा घर घर में लहराओ

6 **अपने** घर पर 12 झालरों (या'नी लड़ियों) या कम अज़ कम 12 बल्बों से नीज़ अपनी मस्जिद व मह़ल्ले में भी 12 दिन तक ख़ूब चरागां कीजिये। (मगर इन कामों के लिये बिजली चोरी करना ह़राम है। लिहाज़ा इस सिल्सिले में बिजली फ़राहम करने वाले इदारे से राबित़ा कर के जाइज़ ज़राएअ़ की तरकीब बनाइये।) सारे अ़लाक़े

को सब्ज़ सब्ज़ परचमों और रंग बिरंगे बल्बों से सजा कर दुल्हन बना दीजिये। मस्जिद और घर की छत पर चौक वग़ैरा पर राहगीरों और सुवारियों को तक्लीफ़ से बचाते हुए हुक़ूक़े आम्मा तलफ़ किये बिग़ैर फ़ज़ा में मुअ़ल्लक़ 12 मीटर या ह़स्बे ज़रूरत साइज़ के बड़े बड़े परचम लहराइये। बीच सड़क पर परचम मत गाड़िये कि इस से ट्राफ़िक का निज़ाम **मु-तअस्सिर** होता है। नीज़ गली वग़ैरा कहीं भी इस त़रह़ की सजावट न कीजिये जिस से मुसल्मानों का रास्ता तंग हो और इन की ह़क़ त-लफ़ी और दिल आज़ारी हो।

एक मशरिक़, एक मग़रिब, एक बामे का'बा पर
नस्ब परचम हो गया, अह्लंव व सह्लन मरह़बा (वसाइले बख़्शिश, स. 453)

7 **हर** इस्लामी भाई ह़स्बे तौफ़ीक़ ज़ियादा वरना कम अज़ कम 12 रुपै के **मक- त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ रसाइल और म-दनी फूलों के मुख़्तलिफ़ पेम्फ़लेट जुलूसे मीलाद में बांटे और इस्लामी बहनें भी तक़्सीम करवाएं। इसी त़रह़ सारा साल अपनी दुकान वग़ैरा पर लंगरे रसाइल का एहतिमाम फ़रमा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये। शादी ग़मी की तक़ारीब में और मर्ह़ूमों के ईसाले सवाब की ख़ात़िर भी ''लंगरे रसाइल'' चलाइये और दीगर मुसल्मानों को इस की तरग़ीब दीजिये।

बांट कर म-दनी रसाइल दीन को फैलाइये
कर के राज़ी ह़क़ को ह़क़दारे जिनां बन जाइये

8 **सगे मदीना** का तह़रीर कर्दा पेम्फ़लेट ''**जश्ने विलादत** के

12 म-दनी फूल" मुम्किन हो तो 112 वरना कम अज़ कम 12 अ़दद नीज़ हो सके तो रिसाला "सुब्हे बहारां" 12 अ़दद **मक-त-बतुल मदीना** से हदिय्यतन ह़ासिल कर के तक़्सीम कीजिये । ख़ुसूसन उन तन्ज़ीमों के सर बराहों तक पहुंचाइये जो जश्ने विलादत की धूमें मचाते हैं । रबीउ़न्नूर शरीफ़ के दौरान 1200 रूपै अगर येह न हो सके तो 112 रूपै और अगर येह भी न बन पड़े तो 12 रूपै (बालिग़ान व बालिग़ात) किसी सुन्नी आ़लिम को पेश कीजिये । अगर अपनी मस्जिद के इमाम, मुअज़्ज़िन या ख़ुद्दाम में बांट दें तब भी ठीक है बल्कि येह ख़िदमत हर माह जारी रखने की निय्यत करें तो मदीना मदीना । जुमुआ़ के रोज़ दें तो बेहतर कि जुमुआ़ को हर नेकी का सत्तर गुना सवाब मिलता है । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरे बयान का केसिट सुन कर कई लोगों की इस्लाह़ होने की ख़बरें हैं, आप ह़ज़रात में भी कुछ न कुछ ऐसे ख़ुश नसीब होंगे जो बयान का केसिट सुन कर म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हुए होंगे । लिहाज़ा ऐसी केसिटें और V.C.D.s लोगों तक पहुंचाना दीन की अ़ज़ीम ख़िदमत और बे इन्तिहा सवाब का बाइ़स है तो जिस से बन पड़े हफ़्ते में वरना महीने में कम अज़ कम 12 ऑडियो या विडियो केसिटें सुन्नतों भरे बयान की ज़रूर फ़रोख़्त करे । **मुख़य्यर** इस्लामी भाई अगर मुफ़्त तक़्सीम करें तो मदीना मदीना । जश्ने विलादत की ख़ुशी में बयान की केसिटें और V.C.D.s ख़ूब तक़्सीम फ़रमाइये और तब्लीगे़ दीन में हि़स्सा लीजिये । शादियों के मवाक़ेअ़ पर "शादी कार्ड" के साथ रिसाला और हो सके तो

बयान का केसिट या V.C.D.s भी मुन्सलिक फ़रमाइये। ईद काड्र्ज़ का रवाज ख़त्म कर के इस की जगह भी येही राइज कीजिये ताकि जो रक़म ख़र्च हो उस से दीन का भी फ़ाएदा हो। मुझे लोग क़ीमती ईद काड्र्ज़ भिजवाते हैं इस से दिल ख़ुश होने के बजाए जलता है। काश! ईद कार्ड पर ख़र्च होने वाली रक़म दीन के काम में सर्फ़ की जाती! नीज़ उस पर लगी हुई अफ़्शां (या'नी चमकदार पाउडर) से सख़्त परेशानी होती है।

उन के दर पे पलने वाला अपना आप जवाब
कोई ग़रीब नवाज़ तो कोई दाता लगता है

9 **बड़े** शहर में हर अ़लाक़ाई मुशा-वरत का निगरान (क़स्बे वाले क़स्बे में) 12 दिन तक रोज़ाना मुख़्तलिफ़ मसाजिद में अ़ज़ीमुश्शान सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त मुन्अ़क़िद करे। (ज़िम्मेदार इस्लामी बहनें घरों में इज्तिमाआ़त फ़रमाएं) रबीउ़न्नूर शरीफ़ के दौरान होने वाले तमाम इज्तिमाआ़त में जिन से हो सके वोह सारा महीना सब्ज़ परचम साथ लाया करें।

लब पर ना'ते रसूले अकरम हाथों में परचम
दीवाना सरकार का कितना प्यारा लगता है

10 **ग्यारह** की शाम को वरना 12वीं शब को ग़ुस्ल कीजिये। हो सके तो इस ईदों की ईद की ता'ज़ीम की निय्यत से सफ़ेद लिबास, इमामा, सरबन्द, टोपी, सर पर ओढ़ने के लिये सफ़ेद चादर, पर्दे में पर्दा करने के लिये कथ्थई चादर, मिस्वाक, जेब का रूमाल, चप्पल, तस्बीह़, इत्र की शीशी, हाथ की घड़ी, क़लम, क़ाफ़िला पेड वग़ैरा अपने इस्ति'माल की हर चीज़ मुम्किना सूरत में नई

लीजिये (इस्लामी बहनें भी अपनी ज़रूरत की जो जो अश्या मुम्किन हों वोह नई लें)

आई नई हुकूमत सिक्का नया चलेगा
आलम ने रंग बदला सुब्हे शबे विलादत (ज़ौके ना'त, स. 67)

11 12वीं शब **इज्तिमाए मीलाद** में गुज़ार कर ब वक़्ते सुब्हे सादिक़ अपने हाथों में सब्ज़ सब्ज़ परचम उठाए दुरूदो सलाम के हार लिये अश्कबार आंखों से ''सुब्हे बहारां'' का इस्तिक़्बाल कीजिये । बा'दे नमाज़े फ़ज्र **सलाम व ईद मुबारक** कह कर एक दूसरे से गर्म जोशी के साथ मुलाक़ात फ़रमाइये और सारा दिन ईद की मुबारक बाद पेश करते और ईद मिलते रहिये ।

ईदे मीलादुन्नबी तो ईद की भी ईद है
बिल यक़ीं है ईदे ईदां ईदे मीलादुन्नबी (वसाइले बख़्शिश, स. 465)

12 **हमारे मीठे मीठे आक़ा** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पीर शरीफ़ को रोज़ा रख कर अपना यौमे विलादत मनाते रहे । आप भी यादे मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में 12 रबीउन्नूर शरीफ़ को रोज़ा रख कर सब्ज़ परचम उठाए **जुलूसे मीलाद** में शरीक हों । जहां तक मुम्किन हो बा वुज़ू रहिये । लब पर दुरूदो सलाम और नातों के नग़्मे सजाए, नातों और दुरूदो सलाम के फूल बरसाते, निगाहें झुकाए पुर वक़ार तरीक़े पर चलिये, उछल कूद मचा कर किसी को तन्क़ीद का मौक़अ़ मत दीजिये ।

रबीउ़ल अव्वल तुझ पर अहले सुन्नत क्यूं न हो क़ुरबां
कि तेरी बारहवीं तारीख़ वोह जाने क़मर आया

(क़बालए बख़्शिश, स. 37)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जश्ने विलादत मनाने की निय्यतें

बुख़ारी शरीफ़ की सब से पहली ह़दीसे मुबारक है : اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّات या'नी आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है । (صَحِیح بُخاری ج۱ ص۵) याद रखिये ! हर नेक अ़मल में सवाबे आख़िरत की निय्यत होना ज़रूरी है वरना सवाब नहीं मिलेगा । **जश्ने विलादत** मनाने में भी सवाब कमाने की निय्यत ज़रूरी है । सवाब की निय्यत के लिये अ़मल का शरीअ़त के मुताबिक़ और ज़ेवरे इख़्लास से मुज़य्यन होना शर्त़ है । अगर किसी ने दिखावे और वाह वाह करवाने की ख़ातिर **जश्ने विलादत** मनाया, इस के लिये बिजली की चोरी की, बिलजब्र चन्दा वुसूल किया, बिला इजाज़ते शर-ई मुसल्मानों को ईज़ा दी और हुक़ूक़े आ़म्मा तलफ़ किये, मरीज़ों, सोने वालों और शीर ख़्वार (या'नी दूध पीते) बच्चों को तक्लीफ़ होने का इ़ल्म होने के बा वुजूद ऊंची आवाज़ से लाउड स्पीकर चलाया तो अब सवाब की निय्यत बेकार है बल्कि गुनहगार है । जिस क़दर अच्छी अच्छी निय्यतें ज़ियादा होंगी उसी क़दर सवाब भी ज़ियादा मिलेगा । चुनान्चे **18 निय्यतें** पेश की जाती हैं मगर येह ना मुकम्मल हैं, इ़ल्मे निय्यत रखने वाला सवाब बढ़ाने की ग़रज़ से मज़ीद निय्यतों का इज़ाफ़ा कर सकता है । ह़स्बे ह़ाल येह निय्यतें कर लीजिये :

"जश्ने मीलादुन्नबी मरहबा" के अठ्ठारह हुरूफ़ की निस्बत से जश्ने विलादत मनाने की 18 निय्यतें

《1》 हुक्मे कुरआनी وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अपने रब की ने'मत का ख़ूब चरचा करो। (پ٣٠،الضحى:١١)) पर अ़मल करते हुए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सब से बड़ी ने'मत का चरचा करूंगा 《2》 रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने के लिये जश्ने विलादत की ख़ुशी में चरागां करूंगा 《3》 जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने शबे विलादत जो तीन[3] झन्डे गाड़े थे इस की पैरवी में झन्डे लहराऊंगा 《4》 सब्ज़ गुम्बद की निस्बत से सब्ज़ परचम लगाऊंगा 《5》 धूमधाम से जश्ने विलादत मना कर कुफ़्फ़ार पर अ-ज़-मते मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का सिक्का बिठाऊंगा (घर घर चरागां और सब्ज़ झन्डे देख कर कुफ़्फ़ार यक़ीनन हैरान होते होंगे कि मुसल्मानों को अपने नबी की विलादत से वालिहाना प्यार है) 《6》 जश्ने विलादत की धूम मचा कर शैतान को परेशान करूंगा 《7》 ज़ाहिरी सजावट के साथ साथ तौबा व इस्तिग़फ़ार के ज़रीए अपना बातिन भी सजाऊंगा 《8》 बारहवीं रात को इज्तिमाए मीलाद और 《9》 ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दिन निकलने वाले जुलूसे मीलाद में शिर्कत कर के ज़िक्रे ख़ुदा व मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सआदतें और 《10》 उ-लमा व 《11》 सु-लहा की ज़ियारतें और 《12》 आ़शिक़ाने रसूल के कुर्ब

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (त-बरानी)

की ब-र-कतें ह़ासिल करूंगा ﴾13﴿ जुलूसे मीलाद में बा इमामा और ह़त्तल इम्कान ﴾14﴿ बा वुज़ू रहूंगा और ﴾15﴿ जुलूस के दौरान भी मस्जिद की नमाज़े बा जमाअ़त तर्क नहीं करूंगा ﴾16﴿ ह़स्बे तौफ़ीक़ ''लंगरे रसाइल'' की तरकीब बनाऊंगा (या'नी मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ रसाइल व पेम्फ़्लेट नीज़ सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें इज्तिमाए मीलाद और जुलूसे मीलाद में तक़्सीम करूंगा) ﴾17﴿ इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए कम अज़ कम 12 इस्लामी भाइयों को म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की दा'वत दूंगा। ﴾18﴿ जुलूसे मीलाद में ह़त्तल वस्अ़ सारा रास्ता ज़बान व आंख का क़ुफ़्ले मदीना लगाए, ना'तों की समाअ़त और दुरूदो सलाम की कसरत करूंगा।

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हमें ख़ुश दिली और अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ **जश्ने विलादत** मनाने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा और जश्ने विलादत के सदक़े हमें जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िला इनायत कर।

बख़्श दे हम को इलाही बहरे मीलादुन्नबी
नामए आ'माल इस्यां से मेरा भरपूर है

(वसाइले बख़्शिश, स. 477)

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

त़ालिबे ग़मे मदीना व
बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व
बे ह़िसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
का पड़ोस

17 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1427 हि.

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم **:** मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है। (अबू या'ला)

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़्रीबात, इज्तिमाआ़त, ए'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक-त-बतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में वक़्फ़े वक़्फ़े से बदल बदल कर सुन्नतों भरे रसाइल पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये.

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ماخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قران پاک	ضیاء القران مرکز الاولیاء، لاہور	وفاء الوفا	دار احیاء التراث العربی، بیروت
ترجمۂ کنز الایمان	رضا اکیڈمی بمبئی	خصائص کبری	دار الکتب العلمیۃ، بیروت
تفسیرات احمدیہ	پشاور	مواہب لدنیہ	مرکز اہلسنت برکات رضا، ہند
صحیح بخاری	دار الکتب العلمیۃ، بیروت	مدارج النبوت	مرکز اہلسنت برکات رضا، ہند
صحیح مسلم	دار ابن حزم، بیروت	ماثبت بالسنۃ	نعیمیہ رضویہ مرکز الاولیاء، لاہور
معجم اوسط	دار الکتب العلمیۃ، بیروت	تذکرۃ الواعظین	کوئٹہ
فردوس الاخبار	دار الکتاب العربی، بیروت	تذکرۃ الواعظین (اردو)	شبیر برادرز مرکز الاولیاء، لاہور

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (कन्जुल उम्माल)

जश्ने विलादत के मौक़अ़ पर लगाए जाने वाले "दा'वते इस्लामी" के मक़्बूल ना'रे

सरकार की आमद मरह़बा	मम्बए अन्वार की आमद मरह़बा
सरदार की आमद मरह़बा	अच्छे की आमद मरह़बा
सालार की आमद मरह़बा	सच्चे की आमद मरह़बा
मुख़्तार की आमद मरह़बा	सोहने की आमद मरह़बा
मन्ठार की आमद मरह़बा	मोहने की आमद मरह़बा
दिलदार की आमद मरह़बा	बशीर की आमद मरह़बा
ग़म ख़्वार की आमद मरह़बा	नज़ीर की आमद मरह़बा
ताजदार की आमद मरह़बा	मुनीर की आमद मरह़बा
शानदार की आमद मरह़बा	बसीर की आमद मरह़बा
शहरयार की आमद मरह़बा	शहीर की आमद मरह़बा
शहे अबरार की आमद मरह़बा	ख़बीर की आमद मरह़बा
हु़ज़ूर की आमद मरह़बा	ज़हीर की आमद मरह़बा
पुरनूर की आमद मरह़बा	रऊफ़ की आमद मरह़बा
ग़यूर की आमद मरह़बा	रह़ीम की आमद मरह़बा
उस नूर की आमद मरह़बा	करीम की आमद मरह़बा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (हाकिम)

रसूल की आमद मरहबा
नई़म की आमद मरहबा

मक़्बूल की आमद मरहबा
अ़लीम की आमद मरहबा

आमिना के फूल की आमद मरहबा
ह़लीम की आमद मरहबा

यासीन की आमद मरहबा
ह़कीम की आमद मरहबा

त़ाहा की आमद मरहबा
अ़ज़ीम की आमद मरहबा

मुज़्ज़म्मिल की आमद मरहबा
आक़ा की आमद मरहबा

मुद्दस्सिर की आमद मरहबा
दाता की आमद मरहबा

प्यारे की आमद मरहबा
मौला की आमद मरहबा

औला की आमद मरहबा
जाने जानां की आमद मरहबा

आ'ला की आमद मरहबा
सय्याहे़ ला मकां की आमद मरहबा

वाला की आमद मरहबा
मह़बूबे रह़मां की आमद मरहबा

बाला की आमद मरहबा
सरवरे दो जहां की आमद मरहबा

पेशवा की आमद मरहबा
शहे कौनो मकां की आमद मरहबा

दिलबर की आमद मरहबा
मह़बूबे रब की आमद मरहबा

रहबर की आमद मरहबा
सुल्त़ाने अ़रब की आमद मरहबा

अफ़्सर की आमद मरहबा
रसूले अकरम की आमद मरहबा

सरवर की आमद मरहबा
नूरे मुजस्सम की आमद मरहबा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे । (कन्ज़ुल उ़म्माल)

शाहे बनी आदम की आमद मरह़बा ताजवर की आमद मरह़बा

नबिय्ये मुह़्तशम की आमद मरह़बा पयम्बर की आमद मरह़बा

शाहे अ़-रबो अ़जम की आमद मरह़बा मुनव्वर की आमद मरह़बा

शाफ़िए उमम की आमद मरह़बा मुअ़त्त़र की आमद मरह़बा

सरापा जूदो करम की आमद मरह़बा शाहे बह़रो बर की आमद मरह़बा

दाफ़िए रन्जो अलम की आमद मरह़बा रसूले अन्वर की आमद मरह़बा

सय्यिद की आमद मरह़बा ह़बीबे दावर की आमद मरह़बा

जय्यिद की आमद मरह़बा साक़िये कौसर की आमद मरह़बा

त़य्यिब की आमद मरह़बा मक्की की आमद मरह़बा

त़ाहिर की आमद मरह़बा म-दनी की आमद मरह़बा

ह़ाज़िर की आमद मरह़बा अ़-रबी की आमद मरह़बा

नाज़िर की आमद मरह़बा क़-रशी की आमद मरह़बा

नासिर की आमद मरह़बा हाशिमी की आमद मरह़बा

ज़ाहिर की आमद मरह़बा मुत्त़लिबी की आमद मरह़बा

बात़िन की आमद मरह़बा सुल्त़ां की आमद मरह़बा

ह़ामी की आमद मरह़बा ज़ीशां की आमद मरह़बा

आक़ाए अ़त्त़ार की आमद मरह़बा गै़ब दां की आमद मरह़बा